"माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्म-संकल्पना व व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन"

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

के

शिक्षाशास्त्र विषय में डॉ० ऑफ फिलॉसफी (पी.एच -डी.) उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोधकार्य की शोध संक्षेपिका

P. R. Singh 04/02/24

पर्यवेक्षक

डॉ प्रतिभा रानी सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

डॉ ज़ाकिर हुसैन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज

लहेरियासराय, दरभंगा, बिहार

Dr. Pratibha Rani Singh
Assistant Professor
Dr. Z. H. T. T. College
L.Sarai, Darbhanga

Dilip Kr 4/2/24

शोधकर्त्ता

दिलीप कुमार

PAT ROLL – E 2206012

CLASS ROLL - 34

माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्म-संकल्पना व व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन

प्रस्तावना

शिक्षा एवं सृजनात्मकता मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक है। मनुष्य अपने जन्म से मृत्यु तक शिक्षा प्राप्त करता है और यह प्रक्रिया पूर्ण जीवन चलती रहती है। प्रारम्भ में शिक्षा प्रदान करने का कार्य घर-परिवार एवं समुदाय करते थे। तत्पश्चात् व्यक्ति औपचारिक साधनों जैसे विद्यालय, कॉलेज एवं युनिवर्सिटी से शिक्षा ग्रहण करता है। वर्तमान में शिक्षा का अर्थ काफी व्यापक हो गया है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से बच्चे का पूर्ण विकास अर्थात् शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास किया जाता है, इस हेतु शिक्षा में मनोविज्ञान ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया।

माध्यमिक स्तर के छात्रों का शिक्षा से जुड़ा बहुत महत्वपूर्ण दौर होता है। 21वीं सदी के कौशल के रूप मे सृजनात्मकता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस दौर में छात्र न केवल विभिन्न विषयों की ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि उनका मानसिक और आदर्शिक विकास भी होता है। इसके साथ ही, सृजनात्मकता, बुद्धि, आत्म-संकल्पना, और व्यक्तित्व भी छात्रों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। इस लेख में, हम देखेंगे कि इन चार महत्वपूर्ण पहलुओं का छात्रों के शिक्षा और विकास पर कैसे प्रभाव पड़ता है ।

सृजनात्मकता एक व्यक्ति की अनूठी पहचान को उजागर करती है, जिससे उसका सोचने का तरीका और दृष्टिकोण अनूठे होते हैं। माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता पर पड़े प्रभाव की दृष्टि से, शिक्षा प्रणाली को इसे प्रोत्साहित करने का माध्यम बनाने का महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सृजनात्मकता का प्रयोग छात्रों को नये और विचारशील तरीकों से सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है और उन्हें अपनी विचारों और विचारों को अद्वितीय और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। सृजनात्मकता के माध्यम से, छात्र न केवल अपने शिक्षा क्षेत्र में बल्कि अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी नए और अद्वितीय समाधानों को खोज सकते हैं।

बुद्धि छात्रों के मानसिक समझ और अभिकल्पना को विकसित करने में मदद करती है। यह उनके ज्ञान को विस्तारित करने और उनके मानसिक चुनौतियों का समाधान ढूंढने में मदद करता है। माध्यमिक स्तर के छात्रों की बुद्धि के प्रभाव की दृष्टि से, एक सशक्त बुद्धि उन्हें अधिक विचारशील बनाती है और उन्हें विभिन्न विषयों में अधिक महार्षि होने की क्षमता प्रदान करती है। छात्र जब

बुद्धिमत्ता के साथ सोचते हैं, तो उन्हें किसी भी चुनौती का समाधान ढूंढने की क्षमता होती है , और वे अपने विद्यालय और जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

आत्म-संकल्पना छात्रों के आत्म-मूल्यांकन की भावना होती है। यह उनके आत्म-विश्वास और स्वाभिमान को बढ़ावा देती है, जिससे वे अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने में सफल हो सकते हैं। माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए आत्म-संकल्पना का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस दौर में उन्हें अपने अभिवादन और व्यवहार को सुधारने का मौका मिलता है। आत्म-संकल्पना से छात्र अपनी कमियों को स्वीकार करने की क्षमता विकसित करते हैं और स्वतंत्रता से सोचते हैं कि वे कैसे और कहां सुधार सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप, वे अपने जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

व्यक्तित्व छात्र के स्वभाव और व्यक्तिगत पहचान को प्रकट करता है। माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है क्योंकि इस दौर में वे अपनी आत्म-पहचान और स्वाभाविक रूप से अपने क्षमताओं को पहचानते हैं। व्यक्तित्व के माध्यम से, वे अपने रुचियों, पैसियों, और उत्कृष्टता क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं, और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपने स्वाभाविक गुणों का उपयोग कर सकते हैं। माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता, बुद्धि, आत्म-संकल्पना, और व्यक्तित्व पर पड़े प्रभाव उनके शिक्षा और विकास में महत्वपूर्ण होते हैं। इन पहलुओं को सही दिशा में प्रबंधित करने के लिए, शिक्षा प्रणाली को सृजनात्मकता, बुद्धि, आत्म-संकल्पना, और व्यक्तित्व को प्रोत्साहित करने के लिए अधिक उत्कृष्ट तरीके से डिज़ाइन करना आवश्यक है। इसके परिणामस्वरूप, छात्र अपने जीवन के सभी पहलुओं में सफलता प्राप्त कर सकते हैं और एक समृद्धि से भरपूर जीवन जी सकते हैं।

सृजनात्मकता

सामान्य अर्थ में सृजनात्मकता का आशय चिंतन प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा नवीनं विचारों का जन्म होता है। सृजनात्मकता का अर्थ नवीनता को व्यवहार में लाने वाली योग्यता से है। डॉ. रघुवीर ने इसका अर्थ, सृजन, उत्पन्न करना, बनाना बताया है। प्रायः हम विद्यालयीन स्नेह सम्मेलन के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के समय पाते हैं कि विद्यालय का एक छात्र अच्छा कवि है, एक कहानीकार है, एक चित्रकार है, एक वैज्ञानिक है, एक साफ्टवेयर विशेषज्ञ है, एक संगीतकार है, एक अभिनेता है। अतः उन छात्रों की सृजनात्मकता से हमारा साक्षात्कार होता है। सृजनात्मकता प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का एक विशिष्ट गुण होता है। यदि बालकों की सृजनात्मकता की पहचान शीघ्र कर ली जाए एवं उनके विकास के समुचित प्रयास

P.R. Dilip K

विद्यालय एवं अभिभावक करें, तब निश्चित ही इससे न केवल विद्यालय अपितु राष्ट्र समृद्ध बन सकता है बल्कि बालक का समुचित विकास संभव है।

बुद्धि

बुद्धि शब्द से प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप से जुड़ा हुआ है। बुद्धि की संकल्पना के बारे में सामान्य व्यक्ति से लेकर मनोवैज्ञानिक तक में मतभेद है। अध्यापक कक्षा के उस विद्यार्थी को बुद्धिमान मानता है जो कक्षा में नियमित आए, अध्यापक के प्रश्न की सही व तुरन्त उत्तर दे, परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करें। एक दुकानदार उस विक्रय बालक या बालिका को बुद्धिमान मानता है जो उसका ज्यादा सामान बेचे। ठीक उसी प्रकार मनोवैज्ञानिकों में भी बुद्धि की संकल्पना के सम्बन्ध में मतभेद है। फ्रीमेन ने इन्हें चार भागों में वर्गीकृत किया है- 1. सीखने की योग्यता 2. वातावरण के प्रति समायोजन की योग्यता 3. अमूर्त चिंतन की योग्यता 4. शक्तिपुंज सामान्य योग्यता ।

वेक्षर के अनुसार "बुद्धि व्यक्ति की सार्वभौम योग्यता है जिसके द्वारा वह उद्देश्यपूर्ण कार्य करता है, तर्कपूर्ण ढंग से सोचता है, तथा प्रभावपूर्ण ढंग से वातावरण के साथ सम्पर्क स्थापित करता है। "स्टोडार्ड के अनुसार "बुद्धि वह मानसिक योग्यता है जिसके द्वारा इस प्रकार की प्रक्रियाओं को क्रियान्वित किया जाता है जिसमें (1) कठिनाई (2) जटिलता (3) अमूर्तता (4) मितव्ययता (5) सोद्देश्यता (6) सामाजिक महत्ता एवं (8) मौलिकता होती है।" टर्मन के अनुसार- "एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान है जिस अनुपात में वह अमूर्त चिंतन करने योग्य है।"

आत्म संकल्पना आइजनेक और उनके साथियों (1972) के अनुसार "व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं और गुणों के सम्बन्ध में उसकी अभिवृत्ति, निर्णयों और मूल्यों के योग को ही आत्म-संकल्पना कहते है ।"

मनोविज्ञान में आत्म- संकल्पना से सम्बन्धित अनुसंधान अध्ययनों को सन् 1950 के आस-पास से बहुत अधिक महत्व दिया जा रहा है। आत्म- संकल्पना व्यक्तित्व की केन्द्र बिन्दु है। व्यक्तित्व की तुलना साइकिल के पहिए से करें तो कहा जा सकता है कि साइकिल के पहिए में लगा हुआ हब आत्म-प्रत्यय है तथा हब से जुड़ीं हुई तीलियाँ व्यक्तित्व के विभिन्न लक्षण या शीलगुण हैं। कैटेल (1957) ने भी इस सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि -Self-concept is keystone of personality.

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी शब्द पर्सनालिटी का हिन्दी पर्याय है। व्यक्तित्व शब्द का उदय लेटिन परसोना से हुआ है जिसका अर्थ होता है नकाब या मुखौटा समाज, वैज्ञानिक जब व्यक्तित्व शब्द का उपयोग करते है तब वे व्यक्ति के बारे में तीन में से एक अर्थ में उपयोग करते हैं (1) उसका बाह्य आविर्भाव और व्यवहार अथवा सामाजिक उद्दीपक मूल्य । (2) उसके जीवन के स्थायी बल के रूप में उसकी स्वयं की जागरुकता (3) उसका निश्चित प्रकार अथवा मापन योग्य आंतरिक एवं बाह्य लक्षणों का संगठन ।

मन के अनुसार- "व्यक्तित्व व्यक्ति की रचनाओं, व्यवहार के ढंगों, रुचियों, अभिवृत्तियों, शक्तियों, योग्यताओं तथा अभिरुचियों का विशिष्ट संगठन है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

प्रसाद (2002) ने बौद्धिक व अबौद्धिक कारकों का गणितिय सृजनात्मकता के साथ सम्बन्धो का अध्ययन किया। कक्षा सातवी के 540 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया तथा यह पाया गया कि गणितीय उपलब्धि के चरों तथा गणितीय सृजनात्मकता में सार्थक रूप से धनात्मक सह सम्बन्ध है।

गाखर (2003) द्वारा सृजनात्मकता, समस्या समाधान तथा व्यक्तित्व पर अध्ययन किया गया तथा निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि आवासीय स्कूलों के विद्यार्थियों के सात व्यक्तित्व कारकों तथा गणित विषय की उपलब्धि में धनात्मक तथा सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया जबकि अआवासीय स्कूलों के विद्यार्थियों के पाँच व्यक्तित्व कारकों तथा गणित विषय की उपलब्धि में सार्थक व धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सारस्वत (2006) द्वारा हाईस्कूल के विद्यार्थियों की आत्मसंकल्पना का समायोजन, मूल्य, शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर तथा लिंग के सम्बन्ध में अध्ययन किया। इन्होनें अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों की आत्मसंकल्पना धनात्मक व सार्थक रूप से सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित थी। छात्राओं की आत्मसंकल्पना धनात्मक व सार्थक रूप से घर, स्वास्थ्य, सामाजिक, भावात्मक, विद्यालय के सम्पूर्ण समायोजन से सम्बन्धित थी। अध्ययन में यह भी पाया कि केवल आध्यात्मिक आत्मसंकल्पना दोनो ही लिंगो में धनात्मक व सार्थक रूप से शैक्षणिक उपलब्धि से सम्बन्धित थी ।

सेंजोबर (2008) ने भावात्मक बुद्धि व जीवन समायोजन पर अनुसंधान कार्य किया, इन्होनें 153 व्यक्तियों को प्रतिदर्श के रूप में अपने अनुसंधान कार्य हेतु लिया व इस अध्ययन का निष्कर्ष इस

प्रकार था कि भावात्मक बुद्धि धनात्मक रुप से समायोजन में सहायक है तथा इसका आर्थिक स्थिति से कोई संबंध नहीं है।

श्रीदेवी व अन्य (2008) द्वारा उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि, समायोजन, आत्म संकल्पना तथा विद्यालयीन उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया गया तथा यह पाया कि भावात्मक बुद्धि, समायोजन, आत्म संकल्पना तथा उपलब्धि के मध्य धनात्मक सम्बन्ध है।

चेतरी (2014) ने किशोरों के आत्म-संकल्पना तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के साथ सम्बन्ध पर अध्ययन किया। प्रतिदर्श के रूप में शहरी तथा ग्रामीण, विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के कक्षा दसवी के 480 छात्र एवं छात्राओं को लिया गया। निष्कर्ष इस प्रकार थे कि लिंग के आधार पर आत्म संकल्पना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

दानिश्ता (2014) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बंध पर अध्ययन किया। प्रतिदर्श के रूप में यादृच्छिक तकनीकी से 150 विद्यार्थियों को लिया गया। अध्ययन का परिणाम यह प्राप्त हुआ कि बुद्धि धनात्मक एवं सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित है।

गोस्वामी, फूकोन (2014) ने भारत के असम प्रांत से प्रमाणित 10वीं तथा 12वीं स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता स्तर का अनुसंधान किया। निष्कर्ष थे (1) शैक्षिक उपलब्धि तथा सृजनात्मकता आँकड़ों में सांख्यिकी रूप से धनात्मक सम्बन्ध पाया गया जो कि सार्थक था।

समस्या कथन

प्रस्तुत अनुसंधान का समस्या कथन इस प्रकार है **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्म संकल्पना व व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन"**

शोध का महत्व

शोध का महत्व माध्यमिक स्तर के छात्रों के विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शोध करने से वे न केवल ज्ञान का अध्ययन करते हैं, बल्कि उन्हें अनुसंधान कौशल, तर्कशक्ति, और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता मिलती है। शोध के प्रक्रियाक्रम में वे विचारों के साथ अन्याय, समस्याएं खोजते हैं और नए ज्ञान का निर्माण करते हैं। इसके अलावा, छात्रों को स्वयं के प्रति आत्म-संकल्पना बढ़ती है क्योंकि वे अपने शोध क्षमताओं का सबसे अच्छा उपयोग करते हैं और अपने स्वयं के क्षेत्र में माहिर बनने का संकल्प बनाते हैं। यह छात्रों के व्यक्तित्व के विकास को भी प्रोत्साहित करता है, क्योंकि वे अपने विचारों को दुनिया के साथ साझा करने के लिए

आत्मविश्वास और साहस बढ़ते हैं। इसलिए, शोध का महत्व माध्यमिक स्तर के छात्रों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो उन्हें समृद्धि और सफलता की ओर अग्रसर करती है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसंधान के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता के माध्य फलांको की तुलना करना।

2. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।

3. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर आत्म-संकल्पना के प्रभाव का अध्ययन करना।

4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन करना।

5. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि तथा उनकी अन्तक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

6. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, व्यक्तित्व तथा उनकी अन्तक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

7. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्म-संकल्पना तथा उनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

8. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर व्यक्तित्व, आत्म-संकल्पना तथा उनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाऐं है:-

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है।

2. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

3. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर आत्म-संकल्पना का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर व्यक्तित्व का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

5. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, व्यक्तित्व तथा उनकी अन्तर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

6. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर बुद्धि, आत्म-संकल्पना तथा उनकी अन्तक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

7. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर व्यक्तित्व तथा उनकी अन्तर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

8. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की सृजनात्मकता पर व्यक्तित्व, आत्म-संकल्पना तथा उनकी अन्तर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

चरों का परिभाषिकरण

सृजनात्मकता-

सृजनात्मकता, एक व्यक्ति या समूह की यह क्षमता है जिससे नवाचार, मूल्यांकन, और अद्वितीय आदर्शों का निर्माण किया जा सकता है। यह विचारों की स्वतंत्र और सर्वोत्तम रूप से उपयोग करने की क्षमता है, जिससे नए और असामान्य परिणाम उत्पन्न किए जा सकते हैं। सृजनात्मकता कविता, पेंटिंग, संगीत, लेखन, ग्राफिक डिज़ाइन, विज्ञान, तकनीकी, व्यवसाय, और अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह नए समस्याओं का समाधान निकालने में मदद करती है और सर्वोत्तम रूप से व्यक्ति के सोचने और स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने की क्षमता को बढ़ावा देती है। सृजनात्मकता समस्याओं को नई दिशा में देखने की क्षमता को प्रकट करती है और समृद्धि और सामर्थ्य के लिए एक महत्वपूर्ण साधना होती है।

बुद्धि-

बुद्धि एक मानवीय मानसिक गुण है जो मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मानसिक क्षमता है जो हमें विचार करने, सोचने, और सीखने की क्षमता प्रदान करती है। बुद्धि विचारने और अभिप्रेत ज्ञान का उपयोग करके विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान ढूंढने में मदद करती है, जैसे कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और व्यावसायिक क्षेत्रों में. बुद्धि आपके शिक्षा, अनुभव, और सोचने के तरीके का परिणाम होती है और यह आपके फैसलों, क्रियाओं, और

व्यवहार में प्रभाव डालती है। यह आपकी समस्या समझने और समाधान करने की क्षमता को विकसित करने में मदद करती है और जीवन में सफलता पाने के लिए महत्वपूर्ण है. बुद्धि आपके जीवन में नैतिक और सामाजिक मूल्यों का पालन करने में भी मदद करती है और आपको समृद्धि और खुशियों की दिशा में मार्गदर्शन करती है।

आत्म-संकल्पना-

आत्म-संकल्पना एक व्यक्ति की आत्मविश्वास और स्वाभाविक आत्म-मूल्यमान की मानसिक स्थिति है। यह व्यक्ति की आत्मा के साथ जुड़ा होता है और उनकी व्यक्तिगतता का महत्वपूर्ण हिस्सा बनता है। आत्म-संकल्पना व्यक्ति को उनके स्वयं की क्षमताओं, काबिलियत, और सामर्थ्य में विश्वास रखने में मदद करती है, जिससे उन्हें जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफलता पाने में मदद मिलती है। आत्म-संकल्पना की सही मात्रा से, व्यक्ति सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना करने की साहसपूर्णता बढ़ाता है और उन्हें अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

व्यक्तित्व-

व्यक्तित्व एक व्यक्ति के मानसिक, भावनात्मक, और व्यावसायिक गुणों का संगठन होता है जो उसे दुनिया में अद्वितीय बनाता है। यह व्यक्ति की पहचान और व्यक्तिगतता को प्रकट करता है और उसे उसके स्वभाव और स्वभाव के साथ जोड़ता है। व्यक्तित्व उन गुणों, विचारों, और व्यवहार के मिश्रण को दर्शाता है जो एक व्यक्ति को उनके सामाजिक, पेशेवर, और व्यक्तिगत जीवन में अद्वितीय बनाता है। व्यक्तित्व व्यक्ति की मूल्यों, धारणाओं, और आकलनों का परिच्चय देता है और उनके व्यक्तिगत दृष्टिकोण को प्रमोट करता है। यह व्यक्ति के संवाद, संवादना, और समस्या समझने की क्षमता को प्रेरित करता है और उनके आदर्शों, मूल्यों, और मान्यताओं को प्रकट करने में मदद करता है। यह व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों, सामाजिक संबंधों, और पेशेवर सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

अनुसंधान प्रविधि-

अनुसंधान अध्ययन की प्रकृति सवेक्षणात्मक है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए समष्टि दरभंगा जिला के सरकारी विद्यालय एवं गैरसरकारी विद्यालयों से लिया जाएगा । इनमें से अनुसंधानार्थी द्वारा अनुसंधान के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए विद्यालयों से प्रदत्त संकलन हेतु

सम्पर्क किया जाएगा । अंत में 20 विद्यालयों से प्रदत्त संकलन हेतु अनुमति प्राप्त कर । इन 20 विद्यालयों से 400 विद्यार्थियों को स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा चयनित किया जाएगा । ये विद्यार्थी सामान्य वर्ग, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के होंगे । जिनकी उम्र 13 से 15 वर्ष को लिया जाएगा । । ये विद्यार्थी ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के होंगे ।

सीमांकन

प्रस्तुत अनुसंधान अध्ययन की निम्नलिखित सिमाए है-

1. इस अनुसंधान कार्य हेतु केवल विद्यार्थियों को लिया जाएगा जो कि माध्यमिक कक्षा के होंगे ।

2. यह अनुसंधान कार्य दरभंगा जिले के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित होंगे ।

3. प्रस्तुत अनुसंधान में सरकारी विद्यालय एवं गैरसरकारी विद्यालयों को लिया जाएगा ।

7. प्रतिदर्श का आकार 400 होंगे ।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु दरभंगा ज़िला अंतर्गत 20 माध्यमिक विद्यालयों के कुल 400 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया जाएगा जिनमे 200 सरकारी विद्यालयों एवं 200 गैरसरकारी विद्यालयों से चुने जाएंगे । जिनमे से 100 शहरी एवं 100 ग्रामीण क्षेत्र के होंगे

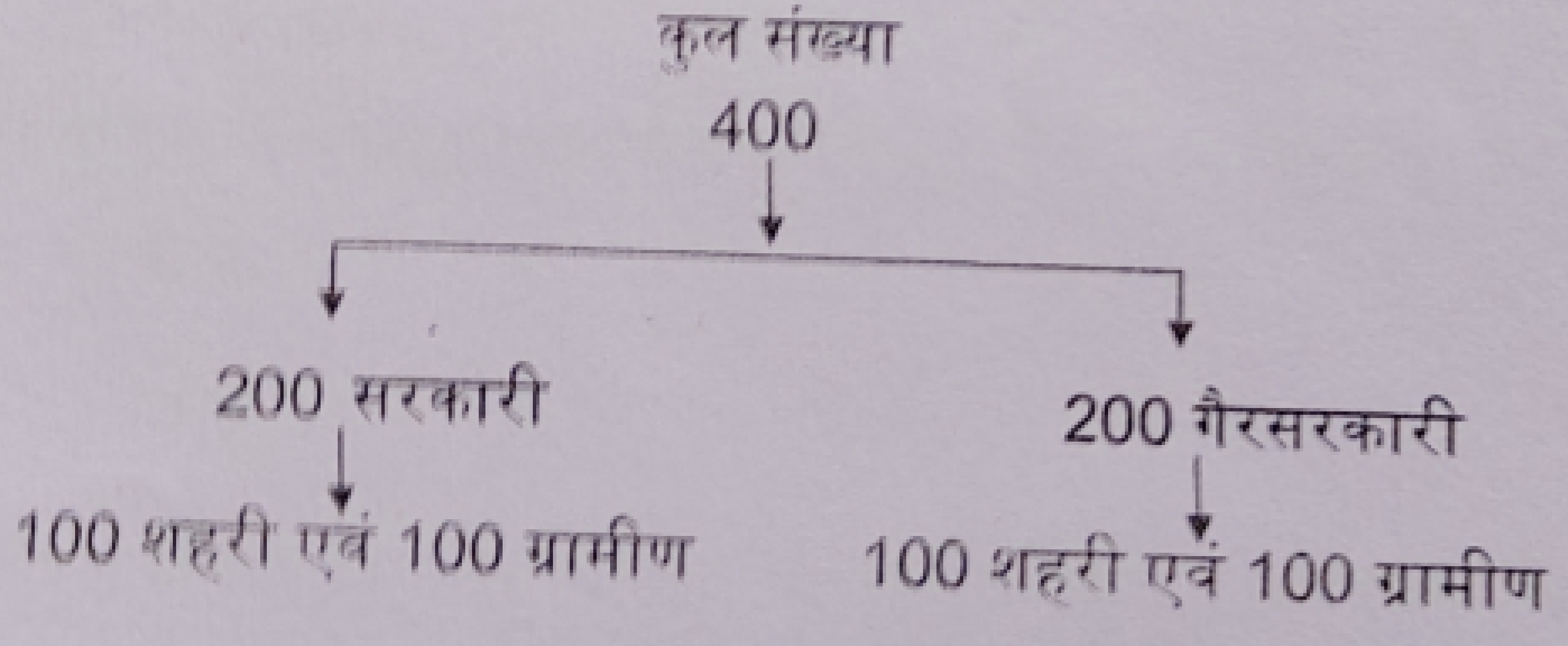

उपकरण

उपकरण की उपरोक्त विशेषताओं तथा उनके मौलिक तथ्यों को ध्यान में रखकर अनुसन्धानकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजानात्मकता, बुद्धि, आत्म-संकल्पना, व्यक्तित्व चर का मापन करने के लिए निम्नलिखित उपकरण का प्रयोग किया जाएगा।

1. सृजानात्मकता के मापन हेतु बाकर मेहन्दी के शाब्दिक सृजनात्मक चिन्तन टेस्ट को प्रयोग में लाया जाएगा।

2. बुद्धि के मापन हेतु आर. के. ओझा तथा के. रे. चौधरी द्वारा निर्मित वस्तुनिष्ठ बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया जाएगा।

3.आत्म-संकल्पना के मापन हेतु डॉ. शेरी, डॉ. वर्मा तथा डॉ. गोस्वामी द्वारा निर्मित आत्म संकल्पना टेस्ट को प्रयोग में लाया गया। इस परीक्षण में कुल 48 पद है तथा यह परीक्षण आत्म संकल्पना के आठ विभिन्न आयामें को मापता है , को प्रयो में लाया जाएगा।

4.हिन्दी अनुवादित व्यक्तित्व मापन हेतु जलोटा एवं कपूर द्वारा व्यक्तित्व इनवेन्टरी का उपयोग किया जाएगा।

शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित उपकरण एवं शोध की उपयोक्ता को देखते हुए उपलब्ध उपकरण का प्रयोग किया जा सकता है

संख्याकिक विश्लेषण

अध्ययन में केवल सर्वेक्षण विधि का ही प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन में सम्मिलित विभिन्न चरों के निष्कर्षो की गणना एवं तुलना हेतु साख्यिकी के रूप में मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, सह-सम्बन्ध गुणांक, बहुचरीय सह-सम्बन्ध, प्रतीपगमन समीकरण तथा प्रतिशत का ही प्रयोग किया जाएगा।

परिणाम एवं विवेचना

प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त किए गए परिणामों का उद्देश्य एवं परिकल्पनावार विवरण

एवं व्याख्या को प्रस्तुत शोध के अनुसार किया जाएगा।

शोध प्रारूप

शोध प्रबंध मुख्यतः निम्न अध्यायों में विभक्त किया जायेगा।

प्रथम अध्याय:- प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय:- संबंधित साहित्य का अध्ययन

तृतीय अध्याय:- अध्ययन विधि

चतुर्थ अध्याय:- प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

पंचम अध्याय:- निष्कर्ष एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

संदर्भ सूची

अग्रवाल, जे.सी. (2007). शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध आगराः विनोद पुस्तक मंदिर अत्री, वी. के. (2005). शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार नई दिल्ली: सुमित इन्टरप्राइजेस भटनागर ए.बी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2005). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

दास, भगवान (2006). शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली: ओमेगा पब्लिकेशन्स.

गुप्ता, एस.पी. (2004) अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2010) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2006) शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर मदान, पी. एवं गर्ग, एस. (2016) भारत में शिक्षा स्थिति, समस्याऐं एवं मुद्दे. अग्रवाल पब्लिकेशन

मित्तल, एस. (1995) शैक्षिक तकनीकी जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रूप रेखा, राष्ट्रीय नई दिल्ली शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2005.

P.P.

Dilip

पाल, हंसराज (2006), प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निर्देशालय, नई दिल्ली.

पाल, हंसराज एवं शर्मा, मंजुलता (2007). प्रतिभाशालियों की शिक्षा नई दिल्ली: क्षिप्रा पब्लिकेशन्स.

पाण्डेय, के एवं श्रीवास्तव, एस. (2007) शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली: टाटा मेग्राहिल पब्लिशिंग

कम्पनी लिमिटेड, पाठक, पी.डी. (2006). शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2

शर्मा, आर. ए. (2004), शिक्षा अनुसंधान आर. लाल बुक डिपो, मेरठ,

शर्मा, आर. ए. (2005), अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

शर्मा, आर. ए. (2005), भावी शिक्षकों हेतु आधारभूत कार्यक्रम. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ,

शर्मा, आर. ए. (2005). पाठ्यक्रम, शिक्षणकला तथा मूल्यांकन. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ. शर्मा, आर. ए. (2005), शिक्षा तथा मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी अनुसंधान आर. लाल

बुक डिपो, मेरठ, शर्मा, आर. ए. (2005), शैक्षिक एवं मानसिक मापन. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ. शर्मा, राजीव एवं अन्य (2012), उद्यमिता विकास, देवी अहिल्या प्रकाशन, इन्दौर

सिंह, ए.के. (2009) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

04/02/24

ratibha Rani Singh
sistant Professor
Z. H. T. T. College
rai, Drbhanga

4/2/24